AD EDUXIAN JOURNAL
A Quarterly Multidisciplinary Blind Peer Reviewed & Refereed Online International Journal
Google Scholar Indexing IF: 1.024
Vol (2), Issue (1), Feb-May 2025 ISSN: 3048-9751

व्यावसायिक परिपक्वता और तकनीकी कौशल का संवर्धन: एन०ई०पी 2020 के कौशल-आधारित दृष्टिकोण के संदर्भ में मालवीय जी का शैक्षिक दृष्टिकोण

आकांक्षा उपाध्याय

Review:13/02/2025 Acceptance:19/03/2025 Publication: 02/05/2025

सार: यह वैचारिक आलेख मदन मोहन मालवीय जी के शिक्षा दर्शन और राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 के लक्ष्यों के बीच संबंधों की खोज करता है, विशेष रूप से कौशल विकास, व्यावसायिक प्रशिक्षण और नैतिक शिक्षा के संदर्भ में। यह व्यावसायिक परिपक्वता (Vocational Maturity)और तकनीकी प्रतिभा सहित प्रमुख मानकों को परिभाषित करके शुरू होता है। चर्चा में मालवीयजी के दर्शन को वर्तमान शैक्षणिक परिवेश में लागू करने के व्यावहारिक निहितार्थों पर प्रकाश डाला गया है, साथ ही प्रशिक्षक शिक्षा और उद्यम भागीदारी की आवश्यकता सहित क्षमता एवं चुनौतियों को स्वीकार किया गया है। उपलब्ध शोध पत्र, आलेख, साहित्य और नितीगत दस्तावेज के मूल्यांकन के संश्लेषण के माध्यम से, यह अध्ययन तकनीकी दक्षता और नैतिक सुधार पर दोहरी मान्यता के मूल्य को रेखांकित करता है, अंत में यह प्रस्तुत करता है कि मालवीय जी के विश्वासों में निहित एक शैक्षिक मॉडलNEP 2020 के सपनों को सजा सकता है। पेपर भविष्य के अध्ययन के रास्तों की पहचान करके समाप्त होता है जो इन शैक्षणिक दर्शनों को एकीकृत करके और उसका प्रभाव विद्यार्थियों के विकास पर क्या पड़ता है इसकी समान रूप से जांच कर सकते हैं।

बीज शब्द: व्यावसायिक परिपक्वता, तकनीकी प्रतिभा, नैतिक शिक्षा, मालवीय शिक्षा दर्शन, एनईपी 2020

प्रस्तावना: वैश्विक अर्थव्यवस्था में हो रहे तेजी से विकास ने अर्थव्यवस्था को जो गति प्रदान की है उसके मद्देनजर नजर, शिक्षा प्रणालियों में न केवल सैद्धांतिक ज्ञान बल्कि व्यावहारिक कौशल विकसित करने की तत्काल आवश्यकता है जो विद्यार्थियों को वास्तविक दुनिया की चुनौतियों के लिए तैयार करते हैं (Anu, 2023)। भारत में राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 इस दिशा में एक ऐतिहासिक सुधार है, जो कौशल विकास, व्यावसायिक प्रशिक्षण और तकनीकी दक्षता पर ज़ोर देकर देश की शिक्षा को पुनर्जीवित करने का प्रयास करती है(Government of India, Ministry of Education. 2020)। शैक्षिक स्तरों पर कौशल-आधारित शिक्षा की अनुशंसा करके, एनईपी 2020 पारंपरिक शिक्षा और कार्यबल में आवश्यक दक्षताओं के बीच की खाई को पाटने की आकांक्षा रखता है।अप्रत्यक्ष रूप से देखा जाए तो इसके केन्द्र में "व्यावसायिक परिपक्वता" को बढ़ावा देना भी सम्मिलित है - विद्यार्थियों की उचित कैरियर विकल्प बनाने की तत्परता एवं क्षमता - और "तकनीकी दक्षता" - विशेषज्ञता और अनुकूलनशीलता के साथ तकनीकी कार्यों को करने की क्षमता। इन लक्ष्यों

के एकीकरण के लिए एक शैक्षिक दर्शन की आवश्यकता है जो केवलकौशल आधारित शिक्षा के अलावानैतिक मूल्यों, सामाजिक जिम्मेदारी और व्यावहारिक ज्ञान के विकास को भी संतुलित करे। इस संदर्भ में, दूरदर्शी नेता और बनारस हिंदू विश्वविद्यालय (बीएचयू) के संस्थापक महामना श्री मदन मोहन मालवीय जी का शैक्षिक दर्शन एक महत्वपूर्ण रूपरेखा प्रस्तुत करता है। मालवीय जी की शैक्षिक दृष्टि समग्र थी, जो समाज में सार्थक योगदान दे सकने वाले व्यक्तियों के सर्वांगीण विकास पर केंद्रित थी। उन्होंने एक ऐसी शिक्षा प्रणाली का समर्थन किया,जो नैतिक मूल्यों में निहित थी, राष्ट्रीय गौरव पर आधारित थी और व्यावहारिक कौशल विकास के लिए समर्पित थी(Salmani, 2024)। एक ऐसी शिक्षा में उनका विश्वास जो व्यक्ति और राष्ट्र दोनों की सेवा करती है। मालवीय जी आर्थिक उन्नति के लिए विज्ञान को गरीबी दूर करने का साधन मानते थे (Singh & Yadav, 2017)।मालवीय जी ने शिक्षा को व्यक्तिगत सशक्तिकरण और राष्ट्रीय प्रगति दोनों के लिए एक वाहन के रूप में देखा, एक ऐसे दृष्टिकोण की वकालत की जो तकनीकी कौशल को नैतिक शिक्षा और नागरिक जिम्मेदारी के साथ जोड़ता है। उनका मानना था कि एक सच्ची शिक्षा को न केवल विद्यार्थियों को पेशेवर क्षमता के लिए प्रशिक्षित करना चाहिए, बल्कि उनके चरित्र और मूल्यों का पोषण भी करना चाहिए, उन्हें जिम्मेदार नागरिक के रूप में सेवा करने के लिए तैयार करना चाहिए। एनईपी 2020 के समग्र शिक्षा पर ध्यान केंद्रित करने के आलोक में, मालवीय जी के आदर्श एक ऐसा मॉडल प्रस्तुत करते हैं जो शिक्षा के व्यावहारिक और नैतिक दोनों आयामों को संबोधित करता है, जिससे उनका दर्शन समकालीन शैक्षिक सुधार प्रयासों के लिए अत्यधिक प्रासंगिक हो जाता है।

यह शोध आलेख यह पता लगाने का प्रयास करता है कि मालवीयजी का शैक्षिक दर्शन एनईपी 2020 के लक्ष्यों में कैसे योगदान दे सकता है, विशेष रूप से व्यावसायिक परिपक्वता और तकनीकी दक्षता को बढ़ावा देने में। एनईपी 2020 के दृष्टिकोण के साथ मालवीय जी के मूल्य-आधारित, कौशल-केंद्रित दृष्टिकोण की संगतता और एकीकरण की जांच करके, शोध आलेख का उद्देश्य शिक्षा के एक ऐसे मॉडल की रूपरेखा तैयार करना है जो न केवल कौशल-आधारित शिक्षा पर जोर देता है बल्कि नैतिक नींव को भी बढ़ावा देता है। विशेष रूप से, यह विश्लेषण इस प्रश्न को संबोधित करता है: मालवीय जी के शिक्षा के सिद्धांत भारत के भविष्य के लिए एक कुशल, मूल्य-संचालित कार्यबल बनाने के एनईपी 2020 के उद्देश्य का समर्थन और संवर्धन कैसे कर सकता हैं? मालवीय जी के दर्शन पर फिर से विचार करना एक संतुलित, मूल्य-उन्मुख और कौशल-केंद्रित शैक्षिक मॉडल बनाने के लिए एक मार्गदर्शक ढांचा प्रदान कर सकता है। मालवीय जी की अंतर्दृष्टि का उपयोग करके, इस पेपर का उद्देश्य शैक्षिक सुधार पर चर्चा में योगदान देना है, जो एक ऐसा दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है जो तकनीकी विशेषज्ञता की आवश्यकता को नैतिक और नागरिक विकास के स्थायी महत्व के साथ जोड़ता है।

उद्देश्य:

1. मदन मोहन मालवीय जी का शैक्षिक दर्शन, जिसमें व्यावहारिक कौशल, नैतिक मूल्यों और देश प्रेम पर दिए गए जोर पर प्रकाश डालना है।
2. राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 के कौशल विकास, व्यावसायिक प्रशिक्षण और व्यावसायिक परिपक्वता के लक्ष्यों के साथ कैसे संरेखित होता है और उन्हें कैसे बढ़ा सकता है का अध्ययन करना है।
3. यह पता लगाना है कि मालवीयजी के मूल्य आधारित शैक्षिक दृष्टिकोण को एकीकृत करने से एनईपी 2020 के ढांचे के भीतर तकनीकी प्रतिभा और नैतिक विकास के लिए एक अधिक समग्र मॉडल कैसे बनाया जा सकता है।
4. मालवीय शिक्षा दर्शन एवं एनईपी 2020 के मुख्य व्यवसायिक उद्देश्यों के द्वारा कैसे विद्यार्थियों को व्यवसायिक सफलता और जिम्मेदार नागरिक दोनों के लिए तैयार किया जा सकता है।

पद्धति: यह शोध लेख वैचारिक और अन्वेषणात्मक दृष्टिकोण से लिखा गया है। यह अध्ययन विशेष रूप से द्वितीयक डेटा स्रोतों पर आधारित है, जिसमें अकादमिक पुस्तकें, सहकर्मी समीक्षितजर्नल, सम्मेलन पत्र, और विश्वसनीय इंटरनेट डेटाबेस का विस्तृत अध्ययन सम्मिलित है।

मुख्य अवधारणाओं:

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 के संदर्भ में मदन मोहन मालवीय जी के शैक्षिक दर्शन की प्रासंगिकता का विश्लेषण करने के लिए, कई मुख्य अवधारणाओं को समझना आवश्यक है: व्यावसायिक परिपक्वता, तकनीकी दक्षता, मालवीय जी का शैक्षिक दर्शन और एनईपी 2020। इनमें से प्रत्येक अवधारणा एक शिक्षा मॉडल को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, जो विद्यार्थियों को करियर की सफलता और जिम्मेदार नागरिक दोनों के लिए तैयार करती है।

- **व्यावसायिक परिपक्वता:** व्यावसायिक परिपक्वता एक विद्यार्थी की तत्परता के स्तर और सूचित करियर विकल्प बनाने और विशिष्ट व्यावसायिक भूमिकाओं में सफलतापूर्वक प्रवेश करने की क्षमता को संदर्भित करती है। अन्य अर्थों में व्यावसायिक परिपक्वता विद्यार्थियों के द्वारा अपने करियर संबंधित

उचित निर्णय लेने एवं जागरूक रहने की क्षमता को संदर्भित करता है (Super, 1957; Savickas, 2005)। जिसमेंकई आयाम सम्मिलित हैं:

1. **व्यक्तिगत परिपक्वता:** व्यक्ति की आत्म-जागरूकता और अपनी ताकत एवं कमजोरीयों, रुचियों और करियर लक्ष्यों की समझ। इसमें व्यक्तिगत आकांक्षाओं में स्पष्टता और दिशा की भावना सम्मिलित है।
2. **संज्ञानात्मक परिपक्वता:** करियर पथों के बारे में सही निर्णय लेने की क्षमता, साथ ही विभिन्न व्यावसायिक भूमिकाओं की आवश्यकताओं और वास्तविकताओं की समझ। इसमें आलोचनात्मक सोच, निर्णय लेने का कौशल और कैरियर के अवसरों का निष्पक्ष मूल्यांकन करने की क्षमता सम्मिलित है।
3. **सामाजिक परिपक्वता:**पेशेवर वातावरण में सम्मिलित होने, सहकर्मियों के साथ सहयोग करने और प्रभावी ढंग से संवाद करने के लिए आवश्यक सामाजिक कौशल और अनुकूलनशीलता। इसमें किसी के करियर विकल्पों के सामाजिक निहितार्थों की समझ और समाज में सकारात्मक योगदान देने की तत्परता भी सम्मिलित है।

व्यावसायिक परिपक्वता के उच्च स्तर का मतलब है कि विद्यार्थी आत्मविश्वास, जागरूकता और अनुकूलनशीलता के साथ विशिष्ट कैरियर पथ अपनाने के लिए अच्छी तरह से तैयार हैं, जिससे उनके अपने चुने हुए क्षेत्रों में सफल होने की अधिक संभावना है (Jia, Han, &et.al, 2024)।

- **तकनीकी प्रतिभा:** तकनीकी प्रतिभा वह योग्यता है जिन्हें अक्सर जटिल कौशल कहा जाता है, विशिष्ट कार्यों को निष्पादित करने और व्यावहारिक परिदृश्यों में विशेष उपकरणों और सॉफ़्टवेयर का उपयोग करने के लिए आवश्यक विशेष ज्ञान और दक्षता हैं। ये योग्यताएँ आमतौर पर औपचारिक शिक्षा, प्रशिक्षण और व्यावहारिक, हाथों-हाथ अनुभव के माध्यम से प्राप्त की जाती हैं(Coursera, 2024)। इसमें निम्नलिखित क्षमता सम्मिलित है:

  1. **तकनीकी उपकरणों को समझना और संचालित करना:**इसमें डिजिटल तकनीक, मशीनरी या विशेष उपकरण आदि में किसी विशिष्ट व्यवसाय से संबंधित उपकरणों का उपयोग करने के व्यावहारिक कौशल सम्मिलित है।
  2. **व्यावहारिक स्थितियों में ज्ञान लागू करें:** प्रतिभा या दक्षता सैद्धांतिक ज्ञान से परे है; इसमें वास्तविक दुनिया के वातावरण में कार्यों को प्रभावी ढंग से निष्पादित करने की क्षमता सम्मिलित है।

3. **नई तकनीकों को अपनाना:** आज के तेजी से विकसित हो रहे श्रम बाजार में, तकनीकी दक्षता में नए उपकरणों, तकनीकों और पद्धतियों को सीखने और अपनाने की लचीलापन भी सम्मिलित है।

आधुनिक उद्योगों की मांगों को पूरा करने में तकनीकी दक्षता महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह सुनिश्चित करती है कि विद्यार्थी न केवल सैद्धांतिक अवधारणाओं से परिचित हों, बल्कि अपने व्यवसायों में प्रभावी होने के लिए आवश्यक व्यावहारिक कौशल भी रखते हों।

- **मालवीय जी का शैक्षिक दर्शन:** मदन मोहन मालवीय जी का शैक्षिक दर्शन ऐसी शिक्षा पर जोर देता है, जिसमें व्यावहारिक कौशल, नैतिक मूल्य और राष्ट्रीय गौरव की भावना निहित हो (Ahmad&Shawkat, 2023)। एक शैक्षिक सुधारक और बनारस हिंदू विश्वविद्यालय के संस्थापक के रूप में, मालवीय जी ने शिक्षा के लिए एक समग्र दृष्टिकोण की कल्पना की जो विद्यार्थियों के व्यक्तिगत विकास और राष्ट्रीय विकास में योगदान दोनों के लिए तैयार करता है। इनके दर्शन में प्रमुख तत्वमें निहित हैं:

    1. **व्यावहारिक कौशल:**मालवीय जी ने व्यावसायिक शिक्षा की अनुशंसा की जो शिक्षार्थियों को वास्तविक दुनिया के अनुप्रयोगों के लिए प्रासंगिक व्यावहारिक कौशल से पूर्ण करती है। उनका मानना था कि शिक्षा को विद्यार्थियों को आत्मनिर्भर और आर्थिक रूप से उत्पादक बनने में सक्षम बनाना चाहिए (Pandey &Mohanty, 2024)।

    2. **नैतिक मूल्य:**मालवीय जी ने चरित्र निर्माण के महत्व पर जोर दिया, उनका मानना था कि शिक्षा को ईमानदारी, सहानुभूति और नैतिक आचरण को बढ़ावा देना चाहिए। उनका कहना था कि ये गुण व्यक्तियों के लिए समाज में सकारात्मक योगदान देने के लिए आवश्यक हैं (Jyoti, 2014)।

    3. **देशभक्ति और नागरिक जिम्मेदारी:**मालवीय जी ने शिक्षा को राष्ट्र के प्रति कर्तव्य की भावना को बढ़ावा देने के साधन के रूप में देखा। उनका मानना था कि शिक्षित व्यक्तियों को भारत की प्रगति में योगदान देना चाहिए, सांस्कृतिक मूल्यों को बनाए रखना चाहिए और सामाजिक कल्याण की दिशा में काम करना चाहिए (Ahmad &Showkat, 2023)।

मालवीय जी का दृष्टिकोण शिक्षा का एक ऐसा मॉडल प्रस्तुत करता है जो बौद्धिक विकास को नैतिक और नागरिक जिम्मेदारी के साथ जोड़ता है,जिसका उद्देश्य ऐसे सर्वांगीण व्यक्ति बनाना है जो स्वयं और समाज दोनों की सेवा करने में सक्षम हों।

- **एनईपी 2020:** राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 देश की शिक्षा प्रणाली में सुधार के लिए भारत सरकार द्वारा शुरू की गई एक व्यापक नीति है। एनईपी 2020 कौशल-आधारित और व्यावसायिक शिक्षा पर ज़ोर देता है, जिसका लक्ष्य विद्यार्थियों को आधुनिक अर्थव्यवस्था के लिए अधिक अनुकूलनीय, रोज़गार योग्य तैयार करना है। एनईपी 2020 के प्रमुख पहलुओं का समावेश हैं:

1. **कौशल-आधारित और व्यावसायिक शिक्षा:**एनईपी 2020 कम उम्र से ही व्यावसायिक प्रशिक्षण और कौशल विकास को बढ़ावा देता है, इन घटकों को शैक्षिक स्तरों में एकीकृत करता है। नीति का उद्देश्य विद्यार्थियों को स्नातक होने तक "नौकरी के लिए तैयार" करना है, जिससे शैक्षणिक शिक्षा और उद्योग की ज़रूरतों के बीच का अंतर कम हो।

2. **तकनीकी शिक्षा का एकीकरण:**NEP 2020 तकनीकी दक्षता और अनुभवात्मक शिक्षा पर जोर देता है, विद्यार्थियों को इंटर्नशिप, अप्रेंटिसशिप और प्रोजेक्ट-आधारित शिक्षा के माध्यम से व्यावहारिक अनुभव प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित करता है। इस दृष्टिकोण का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि विद्यार्थी न केवल सैद्धांतिक ज्ञान सीखें बल्कि व्यावहारिक कौशल भी विकसित करें।

3. **समग्र और लचीला पाठ्यक्रम:** नीति एक लचीली पाठ्यक्रम संरचना को बढ़ावा देती है, जिससे विद्यार्थियों को व्यावसायिक और तकनीकी क्षेत्रों सहित विभिन्न विषयों और कौशल क्षेत्रों की एक विस्तृत श्रृंखला को प्रस्तुत करता है। NEP 2020 शिक्षा के मुख्य घटकों के रूप में नैतिकता, आलोचनात्मक सोच और रचनात्मकता को सम्मिलित करते हुए समग्र विकास की भी अनुशंसा करता है।

कौशल-आधारित शिक्षा को शिक्षार्थियों के विकास के लिए एक समग्र दृष्टिकोण के साथ जोड़कर, NEP 2020 का उद्देश्य एक ऐसी शिक्षा प्रणाली बनाना है जो विद्यार्थियों को समाज में सकारात्मक योगदान देते हुए कार्यबल में उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए तैयार करे।

संकल्पनात्मक विश्लेषण: यह संकल्पनात्मक विश्लेषण इस बात की जांच करता है कि मदन मोहन मालवीय जी का शैक्षिक दर्शन, जो चरित्र निर्माण, नैतिक शिक्षा और व्यावहारिक कौशल पर जोर देता है, राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 के कौशल-आधारित, व्यावसायिक और अनुभवात्मक शिक्षा पर ध्यान केंद्रित करने के साथ कैसे संरेखित होता है और उसे मजबूत कर सकता है। शिक्षा पर मालवीय जी के विचारों और एनईपी

2020 के लक्ष्यों के बीच तालमेल की खोज करके, यह खंड एक समग्र शैक्षिक ढांचे में नैतिक मूल्यों और व्यावहारिक दक्षताओं को एकीकृत करने के लिए एक मॉडल का प्रस्ताव करता है।

1. **व्यावसायिक शिक्षा, तकनीकी कौशल और समग्र विकास पर मालवीय जी का दर्शन:** एक शैक्षिक सुधारक और बनारस हिंदू विश्वविद्यालय के संस्थापक के रूप में मदन मोहन मालवीय जी ने एक ऐसी शिक्षा प्रणाली की कल्पना की, जो न केवल व्यक्तियों को आर्थिक उत्पादकता के लिए तैयार करेगी, बल्कि नैतिक और सामाजिक जिम्मेदारी को भी बढ़ावा देगी। मालवीय जी का मानना था कि सच्ची शिक्षा केवल अकादमिक उपलब्धि से परे है और इसमें ईमानदारी, करुणा और देशभक्ति जैसे गुणों का भी समावेश होना चाहिए। मालवीय जी के अनुसार, "एक शिक्षित व्यक्ति के पास "सिर" (बौद्धिक ज्ञान) और "दिल" (नैतिक चरित्र) दोनों होने चाहिए।"

   मालवीय जी ने व्यावसायिक शिक्षा को व्यक्तिगत और राष्ट्रीय विकास दोनों के लिए महत्वपूर्ण माना। उनकी दृष्टि में कृषि, उद्योग और इंजीनियरिंग जैसे क्षेत्रों में तकनीकी प्रशिक्षण भी सम्मिलित था, जिसका उद्देश्य आत्मनिर्भरता और राष्ट्रीय आर्थिक प्रगति को बढ़ावा देना था। हालाँकि, उन्होंने तर्क दिया कि अकेले तकनीकी शिक्षा अपर्याप्त थी; एक मजबूत नैतिक आधार के बिना, तकनीकी कौशल सच्ची सामाजिक उन्नति की ओर नहीं ले जा सकते।

   मालवीय जी के विचार में, समग्र विकास के लिए यह आवश्यक है कि शिक्षा समान रूप से चरित्र, व्यावहारिक ज्ञान और नागरिक मूल्यों को विकसित करे। इस दृष्टिकोण ने एक संतुलित शिक्षा मॉडल के लिए आधार तैयार किया, जिसमें तकनीकी दक्षता और नैतिक परिपक्वता एक दूसरे के पूरक थे। व्यावसायिक प्रशिक्षण को चरित्र शिक्षा के साथ जोड़कर, मालवीय जी का मानना था कि विद्यार्थी न केवल कुशल पेशेवर बन सकते हैं, बल्कि नैतिक रूप से जिम्मेदार नागरिक भी बन सकते हैं।

   NEP 2020 का कौशल-आधारित दृष्टिकोण: राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 भारत के शैक्षिक दर्शन में एक महत्वपूर्ण बदलाव का प्रतिनिधित्व करती है, जो विद्यार्थियों को वैश्विक अर्थव्यवस्था की मांगों के लिए तैयार करने के लिए कौशल-आधारित, व्यावसायिक और अनुभवात्मक शिक्षा पर जोर देती है। NEP 2020 का एक प्राथमिक लक्ष्य एक ऐसी शिक्षा प्रणाली बनाना है जो शिक्षार्थियों को कम उम्र से ही तकनीकी और व्यावसायिक कौशल से लैस करे, व्यावसायिक परिपक्वता को बढ़ावा दे - सूचित

कैरियर निर्णय लेने की तत्परता - और तकनीकी दक्षता - तकनीकी कौशल को प्रभावी ढंग से लागू करने की क्षमताविकसित हो सके।

NEP 2020 शिक्षा के सभी स्तरों में कौशल-आधारित शिक्षा को एकीकृत करने, लचीलेपन, नवाचार और उद्योग-संरेखित दक्षताओं को बढ़ावा देने का प्रयास करता है। अनुभवात्मक शिक्षा, परियोजना-आधारित असाइनमेंट और इंटर्नशिप के माध्यम से, शिक्षार्थियों से व्यावहारिक कौशल विकसित करने की अपेक्षा की जाती है जो अकादमिक ज्ञान और वास्तविक दुनिया के अनुप्रयोगों के बीच की खाई को पाट सकते हैं। यह दृष्टिकोण शिक्षा के प्रति वैश्विक रुझान को दर्शाता है जो तेजी से बदलती अर्थव्यवस्था के लिए आवश्यक अनुकूलनशीलता, समस्या-समाधान और व्यावसायिक कौशल को प्राथमिकता देता है। इसके अलावा, एन0ई0पी02020 विद्यार्थियों के समग्र विकास पर जोर देता है, जिसका उद्देश्य तकनीकी कौशल के साथ-साथ नैतिक और सामाजिक मूल्यों को स्थापित करना है। नीति एक अच्छी तरह से लक्ष्य केंद्रित शिक्षा की वकालत करती है जो व्यक्तिगत और व्यावसायिक विकास दोनों को बढ़ावा देती है, जो चरित्र विकास के महत्व में मालवीय जी के विश्वास के अनुरूप है। इस प्रकार एनईपी2020 तकनीकी शिक्षा को नैतिक शिक्षा के साथ जोड़ने का अवसर प्रदान करता है, जिससे एक संतुलित मॉडल बनता है जो विद्यार्थियों को समाज के लिए जिम्मेदार और कुशल योगदानकर्ता बनने के लिए तैयार करता है।

दोनों दृष्टिकोणों को एकीकृत करना:कौशल-आधारित, मूल्य-संचालित शिक्षा के लिए एक वैचारिक ढांचा: मालवीय जी के शैक्षिक आदर्श NEP 2020 के कौशल-आधारित शिक्षा के दृष्टिकोण को बढ़ाने के लिए एक मजबूत आधार प्रदान करते हैं। NEP 2020 के कौशल-आधारित दृष्टिकोण में चरित्र और नैतिक शिक्षा पर मालवीय जी के जोर को एकीकृत करके, एक शैक्षिक मॉडल विकसित किया जा सकता है जो तकनीकी क्षमता और नैतिक जिम्मेदारी दोनों को बढ़ावा देता है। ऐसा मॉडल व्यावसायिक प्रशिक्षण के व्यावहारिक पहलू को चरित्र-निर्माण तत्वों के साथ जोड़ेगा, तकनीकी कौशल को उन मूल्यों के साथ जोड़ेगा जो सामाजिक कल्याण और जिम्मेदार नागरिक को बढ़ावा देता हैं। कम उम्र में व्यावसायिक शिक्षा विद्यार्थियों में व्यावसायिक परिपक्वता को मजबूती प्रदान कर सकता है

इस एकीकृत मॉडल में, विद्यार्थी भारत की आर्थिक जरूरतों के अनुरूप क्षेत्रों में व्यावसायिक प्रशिक्षण लेंगे - जैसे कि कृषि, इंजीनियरिंग और सूचना प्रौद्योगिकी - साथ ही साथ चरित्र शिक्षा कार्यक्रमों में भाग लेंगे जो नैतिक मूल्यों, टीम वर्क और नागरिक जिम्मेदारी पर जोर देते हैं। यह दृष्टिकोण विद्यार्थियों की एक ऐसी पीढ़ी तैयार कर सकता है जो न केवल तकनीकी रूप से कुशल हैं बल्कि समाज में सकारात्मक योगदान देने के लिए

कर्तव्य की भावना से प्रेरित भी हैं। उदाहरण के लिए, चरित्र शिक्षा घटकों को तकनीकी पाठ्यक्रमों में एकीकृत किया जा सकता है, जिससे यह सुनिश्चित हो सके कि विद्यार्थी अपने क्षेत्रों से संबंधित नैतिक दुविधाओं और सामाजिक निहितार्थों पर विचार करें। इससे विद्यार्थियों को यह समझने में मदद मिलेगी कि उनके कौशल और ज्ञान के व्यापक सामाजिक निहितार्थ हैं और उन्हें अपनी विशेषज्ञता का जिम्मेदारी से उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है।

NEP 2020 के भीतर मालवीय जी के सिद्धांतों को लागू करने के लिए प्रस्तावित रूपरेखा:NEP 2020 के ढांचे के भीतर मालवीयजी के शैक्षिक दर्शन को लागू करने के लिए, एक काल्पनिक मॉडल की रूपरेखा तैयार की जा सकती है जो शिक्षा के विभिन्न चरणों में व्यावसायिक परिपक्वता, तकनीकी दक्षता और नैतिक विकास को बढ़ावा देता है:

स्कूल स्तर (ग्रेड 6-12):

1. **बुनियादी कौशल विकास:**विद्यार्थीडिजिटल साक्षरता, कृषि और पर्यावरण विज्ञान जैसे क्षेत्रों में परिचयात्मक व्यावसायिक कार्यक्रमों में भाग ले सकते हैं। यह प्रारंभिक संपर्क व्यावहारिक कार्य के लिए प्रशंसा को प्रोत्साहित करता है और व्यावसायिक परिपक्वता की प्रारंभिक भावना को बढ़ावा देता है।
2. **नैतिक और नागरिक शिक्षा मॉडल:** तकनीकी विषयों के साथ एकीकृत, ये मॉडल सामुदायिक सेवा, नैतिक निर्णय लेने और समाज में नागरिकों की भूमिका जैसे विषयों पर ध्यान केंद्रित कर सकते हैं। शिक्षार्थियों को सामुदायिक परियोजनाओं में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है जो उन्हें वास्तविक दुनिया के संदर्भों में अपने कौशल को लागू करने की अनुमति देते हैं।
3. **कैरियर मार्गदर्शन कार्यक्रम:** हाई स्कूल से शुरू करके, विद्यार्थियों को उनकी रुचियों और प्रतिभाओं के अनुरूप कैरियर पथ तलाशने में मार्गदर्शन प्राप्त होगा, जिससे व्यावसायिक परिपक्वता की शुरुआती समझ को बढ़ावा मिलेगा और उन्हें सूचित कैरियर निर्णय लेने में मदद मिलेगी।

कॉलेज और विश्वविद्यालय स्तर:

1. **एकीकृत कौशल-आधारित और नैतिक शिक्षण कार्यक्रम:** स्नातक स्तर पर, तकनीकी और व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में नैतिकता और नागरिक जिम्मेदारी प्रशिक्षण सम्मिलित किया जा सकता है। उदाहरण के लिए, इंजीनियरिंग के विद्यार्थी ऐसे कोर्सवर्क में भाग ले सकते हैं जिसमें तकनीकी प्रशिक्षण और प्रौद्योगिकी के नैतिक उपयोग पर केस स्टडी दोनों शामिल हों।

2. **इंटर्नशिप और अनुभवात्मक शिक्षण:** अनिवार्य इंटर्नशिप और प्रोजेक्ट-आधारित शिक्षण, NEP 2020 के उद्देश्यों के साथ संरेखित, पेशेवरसेटिंग्स में नैतिक आचरण के महत्व को सुदृढ़ करते हुए व्यावहारिक अनुभव प्रदान करेगा।

3. **मेंटरशिप प्रोग्राम:** कॉलेज विद्यार्थियों को ऐसे पेशेवरों से जोड़ने के लिए मेंटरशिप प्रोग्राम स्थापित कर सकते हैं जो अपने क्षेत्रों में तकनीकी उत्कृष्टता और नैतिक जिम्मेदारी दोनों का प्रदर्शन करते हैं। इससे विद्यार्थियों को ऐसे रोलमॉडल मिलेंगे जो कौशल और मूल्यों के एकीकरण का उदाहरण देते हैं।

स्नातकोत्तर और निरंतर शिक्षा:

1. **नैतिक फोकस के साथ व्यावसायिक विकास:**NEP 2020 के आजीवन सीखने पर जोर देने के साथ संरेखित सतत शिक्षा कार्यक्रम, प्रौद्योगिकी, स्वास्थ्य सेवा और पर्यावरण प्रबंधन जैसे क्षेत्रों में नैतिक मुद्दों पर ध्यान केंद्रित करने के साथ उन्नत तकनीकी प्रशिक्षण प्रदान कर सकते हैं।
2. **सामुदायिक जुड़ाव पहल:** व्यावसायिक विकास के हिस्से के रूप में, कार्यक्रम स्नातकों को सामुदायिक कार्य में सम्मिलित होने के लिए प्रोत्साहित कर सकते हैं, स्थानीय आवश्यकताओं को पूरा करने और सामाजिक कल्याण में योगदान देने के लिए अपने कौशल को लागू कर सकते हैं।

यह प्रस्तावित ढांचा मालवीय जी के नैतिक और व्यावहारिक शिक्षा के दृष्टिकोण को NEP 2020 के उद्देश्यों के साथ संरेखित करने का प्रयास करता है,एक ऐसा मॉडल तैयार करता है जो न केवल शिक्षार्थियों को कार्यबल के लिए तैयार करता है बल्कि उनमें सामाजिक जिम्मेदारी और नैतिक परिपक्वता की भावना भी पैदा करता है। तकनीकी दक्षता को नैतिक आधार के साथ जोड़कर, इस दृष्टिकोण का उद्देश्य पेशेवरों की एक पीढ़ी का निर्माण करना है जो आर्थिक विकास और सामाजिक प्रगति दोनों में योगदान दे सकते हैं।

चर्चा: व्यावहारिक निहितार्थ:

एनईपी 2020 ढांचे के भीतर मालवीय के दर्शन को लागू करने से विद्यार्थियों की एक ऐसी पीढ़ी तैयार हो सकती है, जिसमें तकनीकी क्षमता और मजबूत नैतिक आधार दोनों होंगे। कम उम्र से ही चरित्र विकास के साथ-साथ कौशल-आधारित शिक्षा शुरू करना, यह दृष्टिकोण उन लोगों को बढ़ावा दे सकता है जो जिम्मेदार विचारशील करियर निर्णय लेने के लिए तैयार हैं। तकनीकी कौशल और सामाजिक जिम्मेदारी दोनों पर ध्यान

केंद्रित करने वाले विद्यालय और कॉलेज संभवतः ऐसे स्नातक तैयार करेंगे जो अपने समुदायों में सकारात्मक योगदान देते हुए आधुनिक अर्थव्यवस्था की जरूरतों को पूरा करने में सक्षम हैं।

इस ढांचे के अनुप्रयोग से विद्यार्थियों की भागीदारी में भी सुधार हो सकता है, क्योंकि व्यावहारिक सीखने के अवसर अक्सर अकादमिक विषयों को अधिक प्रासंगिक और सार्थक बनाते हैं। इसके अतिरिक्त, शिक्षा के लिए मूल्यों से प्रेरित दृष्टिकोण विद्यार्थियों में गर्व और जिम्मेदारी की भावना पैदा कर सकता है, जिससे वे अपने करियर और समाज दोनों की सेवा करने के लिए तैयार हो सकते हैं।

संभावित चुनौतियाँ और समाधान:

इस मॉडल को लागू करने में प्राथमिक चुनौतियों में से एक शिक्षक प्रशिक्षण और पाठ्यक्रम विकास की आवश्यकता है। पारंपरिक विषयों में नैतिकता और व्यावहारिक कौशल को एकीकृत करने के लिए शिक्षकों को विविध सामग्री और शिक्षार्थियों की ज़रूरतों को संभालने के लिए नई सामग्री और पेशेवर विकास की आवश्यकता हो सकती है। इस समस्या को हल करने के लिए, सरकार मालवीय जी के दर्शन और एनईपी 2020 के उद्देश्यों पर ध्यान केंद्रित करने वाले शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों के लिए समर्पित संसाधन प्रदान कर सकती है, जिससे शिक्षकों को व्यावसायिक और नैतिक निर्देश दोनों में दक्षता हासिल करने में सहायता होगी।

एक और चुनौती उद्योग और सामुदायिक संगठनों के साथ मजबूत साझेदारी की आवश्यकता है ताकि सार्थक अनुभवात्मक सीखने के अवसर प्रदान किए जा सकें। इस समस्या को हल करने के लिए, शैक्षणिक संस्थान स्थानीय उद्योगों, गैर सरकारी संगठनों और सरकारी निकायों के साथ साझेदारी स्थापित कर सकते हैं जो इंटर्नशिप, अप्रेंटिसशिप और मेंटरशिप के अवसर प्रदान करते हैं। इससे शिक्षार्थियों को व्यावहारिक प्रशिक्षण और ऐसे रोलमॉडल तक पहुँच सुनिश्चित होगी जो तकनीकी कौशल और नैतिक जिम्मेदारी दोनों का उदाहरण देते हैं।

निष्कर्ष: NEP 2020 ढांचे के भीतर मालवीय जी के शैक्षिक आदर्शों को एकीकृत करने से भारतीय शिक्षा प्रणाली को एक संतुलित मॉडल बनाकर बेहतर बनाया जा सकता है जो तकनीकी दक्षता और नैतिक विकास दोनों को बढ़ावा देता है। यह दृष्टिकोण विद्यार्थियों को व्यावसायिक परिपक्वता, व्यावहारिक कौशल और अपने समुदायों के प्रति जिम्मेदारी की भावना विकसित करने में सहयोग कर सकता है, जो व्यक्तिगत और राष्ट्रीय प्रगति दोनों के साधन के रूप में शिक्षा के मालवीय जी के दृष्टिकोण के साथ संरेखित करता है। नैतिक मूल्यों

और तकनीकी दक्षताओं को स्थापित करके, यह ढांचा पेशेवरमांगों और सामाजिक जरूरतों दोनों को पूरा करने के लिए तैयार एक योग्य कार्यबल में योगदान दे सकता है तथा विद्यार्थियों के शुरुआती जीवन में व्यावसायिक शिक्षा एवं नैतिक मूल्यों की शिक्षा समावेश उन्हें करियर के प्रति तत्पर रहने की भावना से ओत-प्रोतकर सकता है।

अतः,यह मॉडल नैतिकता-एकीकृत व्यावसायिक प्रशिक्षण की प्रभावशीलता, शिक्षार्थी के विकास पर चरित्र शिक्षा के प्रभाव और प्रौद्योगिकी-सक्षम अनुभवात्मक सीखने की क्षमता जैसे क्षेत्रों में आगे के शोध की संभावनाओं को खोलता है। भविष्य के अध्ययन यह पता लगा सकते हैं कि मालवीय-प्रेरित शिक्षा मॉडल स्नातकों के बीच कैरियर की तत्परता, नौकरी की संतुष्टि और नागरिक जुड़ाव को कैसे प्रभावित करते हैं एवं चल रहे शैक्षिक सुधारों का मार्गदर्शन कर सकते हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची:

- Dwivedi, A. (2024). Ideological similarities and differences between Madan Mohan Malaviya and Mahatma Gandhi. International Journal of History, 6(2), 157–161.
- Jia, H., Han, Y., Chen, W., & others. (2024). Career maturity and job satisfaction: The roles of job crafting and openness. Current Psychology, 43(12), 30268–30289. https://doi.org/10.1007/s12144-024-06626-w
- Lal, D., &Salmani, M. (2024). Educational thoughts of Zakir Husain and Madan Mohan Malaviya and their relevance in the context of NEP-2020: A critical analysis. UNIVERSITY NEWS, 62(33), 17–23.
- Pandey, P., &Mohanty, P. (2024). Tracing the influence of Pandit Madan Mohan Malaviya in contemporary educational system. International Journal of Creative Research Thoughts, 12(1).
- Ahmad, M., &Showkat, S. (2023). Educational philosophy of Pandith Madan Mohan Malaviya and its relevance on contemporary system of education. International Journal for Multidisciplinary Research, 5(2), 1–7. https://doi.org/10.36948/ijfmr.2023.v05i02.2080
- Malik, S. K. (2022). Madan Mohan Malaviya. In Reappraising modern Indian thought (pp. 55–71). Springer Nature. https://doi.org/10.1007/978-981-16-7699-0_4
- Chaubey, V. J. (2021). Pandit Madan Mohan Malaviya's perspective on empowerment of Indian women. Aalochan Drishti: An International Peer Reviewed Refereed Research Journal of Humanities, Special Issue on Contemporary Thought.
- Shivesh. (2019). Management of value-based education by Pandit Madan Mohan Malviya. Scholedge International Journal of Management & Development, 6(1), 1. https://doi.org/10.19085/sijmd060101
- Tripathi, B. (2019). Legal education: Vision of visionaries. Journal of Indian Education, 45(1), 5-13.
- Singh, S., & Yadav, P. N. (2017). Educational thoughts of Pt. Madan Mohan Malaviya and Mahatma Gandhi: A comparative analysis. ShaikshikParisamvad (An International Journal of Education), 7(1), 1–8.
- Chadha, R. (2015). Comparative study of educational philosophy of Ravindranath Tagore and Pandit Madan Mohan Malviya in Indian educational context (Doctoral dissertation). Pacific University. http://hdl.handle.net/10603/318694
- Singh, R. P. B. (2015). MahamanaMalaviya's vision of Banaras Hindu University: A frame of archetypal architecture and cosmic plan. Kashi Journal of Social Sciences, 5(1–2), 61–76.

- Singh, P., & Singh, S. (2012). Malaviya as a great visionary for higher education: Celebrating his 150th birthday. International Journal of Scientific and Research Publications, 2(3), 1.
- Coursera. (2024). What are technical skills? https://www.coursera.org/articles/what-are-technical-skills
- https://books.google.co.in/books?hl=en&lr=&id=LYvkBgAAQBAJ&oi=fnd&pg=PT3&dq=info:9_5FaBz6pacJ:scholar.google.com/&ots=g5wmrdyAqC&sig=b2kaF6rhp_iyPgOhluWsxOTd694&redir_esc=y#v=onepage&q&f=false
- https://books.google.co.in/books?hl=en&lr=&id=KO8oDwAAQBAJ&oi=fnd&pg=PT8&dq=info:Qf4f5HlyJVwJ:scholar.google.com/&ots=25ZrBSYean&sig=B8TcAt_wLQ8Xms6UvnWYhdY-uFg&redir_esc=y#v=onepage&q&f=false